

श्री लब्धि विक्रम जनसेवा ट्रस्ट



ऋषभायन ऋषभायन 3

भारतीय संस्कृति के पुरोधा

शैक्षणिक सांस्कृतिक विचार मंच

अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस और भारतीय सांस्कृतिक प्रदर्शनी मंच तथा अनुभूति थिएटर

तिथि : 27 · 28 · 29 नवंबर 2026, शुक्रवार, शनिवार, रविवार

स्थान : नवलखी मैदान, वडोदरा, गुजरात, भारत

समय : सुबह 9:30 से रात 8 बजे तक

‘ऋषभायन 3’ में आप सादर आमंत्रित हैं

@ f X @rushabhayan | Rushabhayan

सहयोग



SPORTS, YOUTH & CULTURAL
ACTIVITIES DEPARTMENT
Government of Gujarat



Commissioner of Youth Services and Cultural Activities
Sports, Youth and Culture Activities Department,
Government of Gujarat



ऋषभायन के बारे में

'ऋषभायन' श्री लब्धि विक्रम जनसेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित एक ऐसा मंच है, जो भारतीय संस्कृति की झलक पेश करता है। मानव इतिहास और उसकी सभ्यतागत जड़ों की तलाश में हम ऋषभदेव के योगदान का शोध करते हैं, उसे दर्ज करते हैं और लोगों तक पहुंचाते हैं।

भारत की ग्रंथ-परंपराओं और लोक परंपराओं में ऋषभदेव (जिन्हें आदिनाथ भी कहा जाता है) को मानव समाज के प्रथम राजा और प्रथम शिक्षक का दर्जा प्राप्त है। सबसे शुरुआती सामाजिक, आर्थिक और नैतिक व्यवस्था की नींव उन्हीं के नाम है, और कला-कौशल की शुरुआत भी उन्हीं ने की थी। भारतीय ज्ञान परंपरा के कई स्रोत उन्हीं से जुड़े हैं। यही कारण है कि 'ऋषभायन' महज़ एक आयोजन नहीं है, बल्कि एक विचार को आगे ले जाने का प्रयास है। यह विचार भारत के जन-जन में अलग-अलग रूपों में मौजूद है, जिसे हम संवाद और प्रदर्शनी के जरिए एक मंच पर लाते हैं।

पहले संस्करण के समय कई धर्मों के प्रमुखों से विचार-विमर्श किया गया था। इस पर व्यापक सहमति बनी कि राजा ऋषभदेव को केवल एक समुदाय नहीं, बल्कि कई परंपराएं प्रथम राजा और सभ्यता के संस्थापक के रूप में सम्मान देती हैं। इसी साझा पहचान को दर्ज करना, उस पर शोध करना और उसे लोगों तक पहुंचाना ऋषभायन का उद्देश्य है। यह विश्व तक एकता और शांति का संदेश पहुंचाने की एक कोशिश है। ऋषभायन हर समुदाय और हर धर्म के लिए खुला एक सांस्कृतिक जमावड़ा है। यहां विभिन्न परंपराओं के संत और विद्वान एक साथ मंच साझा करते हैं, और समाज के अनेक वर्गों के लोग यहां आते हैं।

हम इस सांस्कृतिक यात्रा के तीसरे वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं – प्रथम आयोजन 2024 में अहमदाबाद में दस हजार लोगों की उपस्थिति के साथ, द्वितीय 2025 में बोरिवली, मुंबई में एक लाख लोगों की उपस्थिति के साथ और तृतीय 2026 में वडोदरा में।

आयोजक
श्री लब्धि विक्रम जनसेवा ट्रस्ट
(LVJST)

ऋषभायन 3
27-29 नवंबर 2026
नवलखी मैदान, वडोदरा

स्वरूप
तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस
और अनुभूतिपूर्ण सांस्कृतिक सम्मेलन

सेमिनार का मुख्य विषय
दंडनीति और भारतीय संस्कृति की
मूलभूत नींव

प्रदर्शनी का मुख्य विषय
भारतीय ज्ञान परंपरा

प्रवेश
निःशुल्क, पंजीकरण के साथ

अकादमिक साझेदार



MSU, वडोदरा



सुमनदीप विद्यापीठ

Parul® University

पारुल विश्वविद्यालय



नालंदा विश्वविद्यालय



VNSGU, सूरत



MKES, मुंबई



SAL एजुकेशन



IGNCA, नई दिल्ली



ऋषभायन 2 के मंच पर विभिन्न परंपराओं के संत, मुंबई, दिसंबर 2025।



ऋषभायन 2 में विभिन्न परंपराओं के प्रमुख, मुंबई, दिसंबर 2025।

27

पहला दिन • शुक्रवार • सुबह 9:30 से

नवंबर 2026

सुबह 9:30 बजे उद्घाटन के साथ ऋषभायन 3 की शुरुआत होगी, जिसके बाद मुख्य डोम में 'सर्वधर्म ऐक्य परिषद: भारतीय एकता का प्रतिबिंब, भारतीय धर्मगुरुओं का मिलन, भारत के मंच से विश्व शांति की गूँज' का आयोजन किया जाएगा।

उद्घाटन

अनुभूति ज़ोन

कला का पारंपरिक और नवीनतम रूप, आदि-शिल्पकला। चौदह प्रकार के प्रासादों की प्रदर्शनी, कला प्रतियोगिता के मॉडल, ग्रंथ विमोचन, स्टॉल उद्घाटन और ज्ञानोत्सव का आरंभ

सात मुख्य स्थल

मुख्य डोम

भारत की सनातन सभ्यता पर अनेक धर्मगुरुओं द्वारा सर्वधर्म ऐक्य परिषद – चिंतन, मंथन सत्र

ऋषभ स्वाध्यायपीठ

कॉन्फ्रेंस और पेपर प्रस्तुति

अकादमिक स्टॉल

पांडुलिपियाँ, ग्रंथ, पुस्तकें, कलाकृतियाँ और एंटीक वस्तुएँ: बिक्री और प्रदर्शनी

ऋषभ पाककला

वन डिस्ट्रिक्ट वन क्यूज़ीन (ODOC): भारत का पारंपरिक आहार, प्रदर्शन, बिक्री और भोजन

अनुभूति ज़ोन

कला की प्रदर्शनी
कला के कुछ नए आयाम – देशभर के विशेषज्ञों द्वारा तैयार कला के मॉडल
कला-आधारित मॉडल, विद्यार्थियों द्वारा तैयार – पूरे गुजरात से

शाम 7 – रात 10

सांस्कृतिक उत्सव

नृत्य-नाटिका



ऋषभायन 2 में 'राजा ऋषभ' ग्रंथ का विमोचन, मुंबई, दिसंबर 2025।

आकर्षण

देशभर के प्रतिष्ठित संतों, जाने-माने कलाकारों तथा लोकप्रिय युवा नेताओं की उपस्थिति के बीच विभिन्न उद्घाटन संपन्न होंगे। इस अवसर पर राजा ऋषभ की 64/72 कलाओं के विजेताओं की घोषणा की जाएगी, साथ ही 11 लाख से अधिक के पुरस्कारों की घोषणा भी होगी*।

*शर्तों के अधीन



ऋषभायन 2, मुंबई, दिसंबर 2025: ट्रेड स्टॉल और विद्यार्थियों द्वारा तैयार मॉडल।

28

दूसरा दिन • शनिवार • सुबह 9:30 से

नवंबर 2026

सुबह 9:30

मुख्य डोम – शास्त्रार्थ

भारतीय परंपरा में ज्ञान का सर्वोच्च शिखर है शास्त्रार्थ – देशभर के संस्कृत, प्राकृत, अनेक भाषाओं और शास्त्रों के ज्ञाता पंडितों के समूहों द्वारा सार्वजनिक शास्त्रार्थ – एक पारंपरिक अनुभव, अनेक वर्षों बाद सार्वजनिक रूप से

ऋषभ स्वाध्यायपीठ

कॉन्फ्रेंस और पेपर प्रस्तुति, और ब्राह्मी लिपि की कक्षाओं का आरंभ

अनुभूति ज़ोन

अनुभूति केंद्र, आदि शिल्पकला विज्ञान, अष्टापद पवेलियन, ग्रंथ एवं पांडुलिपियाँ, अकादमिक साझेदार और ट्रेड स्टॉल

अकादमिक स्टॉल

ऋषभायन कला झाँकी

शाम 7 – रात 10

ऋषभायन संगीतायन

वडोदरा के ख्यातनाम स्वर साधकों की स्वरांजलि के साथ सभी का सम्मान



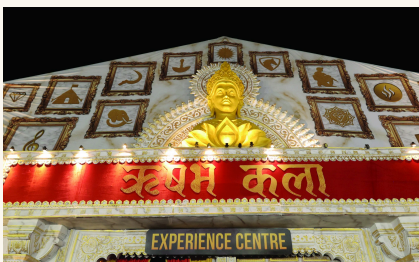
ऋषभायन 1 में एक व्याख्यान, अहमदाबाद, अक्टूबर 2024।

आज का आकर्षण**शास्त्रार्थ**

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ों को सामने लाते हुए, 'अनेकांत: विश्व शांति का मूलाधार' विषय पर भारत भर के पंडित और विद्वान पारंपरिक रीति से शास्त्रार्थ करेंगे। इसमें एक संचालक के साथ विभिन्न परंपराओं के पाँच-पाँच विद्वानों वाली दो टीमें शामिल होंगी। अनेक विद्वानों की मौजूदगी में हमारी परंपरा एक बार फिर से जीवंत हो उठेगी।

वादे वादे जायते तत्त्वबोधः

बार-बार के वाद से ही तत्त्व-बोध होता है



ऋषभायन 2 का ऋषभ कला अनुभूति केंद्र, मुंबई, दिसंबर 2025।

29

तीसरा दिन • रविवार • सुबह 9:30 से

नवंबर 2026

भारत के राजनीतिक चिंतकों का मिलन

अंतिम दिन भारत के राजनीतिक चिंतक मुख्य डोम में मंच संभालते हैं। इसी दिन अनुभूति ज़ोन और अकादमिक कार्यक्रम भी जारी रहते हैं।

सुबह 5:30 – 8

प्रातः साधना – विश्व शांति ध्यान

संगीत और ध्यान के विशेषज्ञों के साथ साधना, योग और ध्यान

सुबह 10 – दोपहर 2

मुख्य डोम

भारत के राजनीतिक चिंतकों का मिलन, अनेक राजनीतिक हस्तियों द्वारा विभिन्न घोषणाएँ

दोपहर 1 – शाम 5

ऋषभ स्वाध्यायपीठ

कॉन्फ्रेंस और पेपर प्रस्तुति, और ब्राह्मी लिपि की कक्षाओं का आरंभ

सुबह 10 – शाम 6

अकादमिक स्टॉल

ऋषभायन कला झाँकी

सुबह 10 – शाम 5:30

ऋषभ पाककला

वन डिस्ट्रिक्ट वन क्यूज़ीन (ODOC): भारत का पारंपरिक आहार, प्रदर्शन, बिक्री और भोजन

सुबह 9:30 – रात 8

अनुभूति ज़ोन

अनुभूति केंद्र, आदि शिल्पकला विज्ञान, अष्टापद पवेलियन, ग्रंथ एवं पांडुलिपियाँ, अकादमिक साझेदार और ट्रेड स्टॉल



राजा ऋषभदेव, हाथ में राजदंड लिए।

मुख्य विषय

दंडनीति

दंडनीति और भारतीय संस्कृति की मूलभूत नींव। दंडनीति वह शास्त्र है जो यह बताता है कि व्यवस्था कैसे बनी रहे और न्याय कैसे हो। ऋषभदेव से जुड़ी परंपरा में इसका उद्देश्य सुधार है, प्रतिशोध नहीं।

कार्यक्रम में परिवर्तन हो सकता है।

मानवता के प्रथम प्रभात से आत्मजागृति तक

गुजराती मूल से अनूदित।

जब धरती पर

मनुष्य तो था
पर मानवता अभी जन्मी नहीं थी,
जब हाथों में शक्ति थी,
पर दिशा नहीं थी,
जब भूख थी,
पर अन्न की संस्कृति नहीं थी,
जब जीवन था,
पर जीवन जीने की कला नहीं थी,
तब
एक पुरुष उठ खड़ा हुआ था...

राजमुकुट से बड़ा,
राजसिंहासन से ऊँचा,
और अपने युग से भी विशाल,
ऋषभ।

उन्होंने मनुष्य को
केवल जीना नहीं सिखाया था,
उन्होंने मनुष्य को
मनुष्य बनना सिखाया था।

हाथ में हल दिया,
तो धरती अन्नमय हुई,
हाथ में अक्षर दिए,
तो मौन वाणी बना,
हाथ में कला दी,
तो जीवन सौंदर्यमय हुआ,
हाथ में व्यवहार दिया,
तो समाज की रचना हुई।

असि से
उन्होंने शक्ति को अनुशासन दिया,
मसि से
विचार को वाणी दी,
कृषि से
धरती को मातृत्व दिया,
विद्या से
अज्ञान के अंधकार में दीप जलाया।

और फिर,
जब मनुष्य ने
बाहर की दुनिया जीत ली,
तब ऋषभ ने
उसे भीतर की दुनिया जीतने को
कहा।

यही तो ऋषभ हैं।

जिनके लिए
संस्कृति केवल महल नहीं थी,
समृद्धि केवल सोना नहीं थी,
विद्या केवल पुस्तकें नहीं थी,
और धर्म केवल विधि नहीं था।

धर्म अर्थात्,
अंतर में जागा हुआ विवेक।

संस्कृति अर्थात्,
शक्ति पर संयम।

समृद्धि अर्थात्,
जितना मिला है
उतना ही रखने की नहीं,
बल्कि जितना ज़रूरी है
उतना ही लेने की बुद्धि।

और मानवता अर्थात्,
अपने सुख में
दूसरों के अस्तित्व को न भूलना।

ऋषभ ने
मानवजाति को संस्कृति दी,
पर साथ ही
संयम का संदेश भी दिया।

उन्होंने
अन्न उगाना सिखाया,
पर भूख की मर्यादा भी बताई।

उन्होंने
संपत्ति का सृजन करना सिखाया,
पर अपरिग्रह का मार्ग भी दिखाया।

उन्होंने
शक्ति दी,
पर अहिंसा का हृदय दिया।

इसीलिए
ऋषभ केवल इतिहास के एक महान
राजा नहीं हैं,

ऋषभ
मानव संस्कृति के प्रथम प्रभात का
नाम है।

और शायद
आज के युग में
ऋषभ को फिर से पढ़ने की ज़रूरत
इसलिए है कि,
मनुष्य आज चाँद तक पहुँच गया है,
पर अपने अंतर तक पहुँचने का रास्ता
भूल गया है।

विज्ञान बढ़ रहा है,
पर विवेक कहीं पीछे छूट गया है।

साधन बढ़े हैं,
पर संतोष घटा है।
संपत्ति बढ़ी है,
पर शांति घटी है।

जानकारी बढ़ी है,
पर ज्ञान की प्यास घटी है।
और इसीलिए
ऋषभ की वाणी आज भी
समय के कान में कहती है,

“प्रगति करो,
पर प्रकृति को मत भूलो।
समृद्ध बनो,
पर संयम मत खोओ।
शक्तिशाली बनो,
पर अहिंसा मत छोड़ो।
ज्ञान पाओ,
पर विनय न खोओ।
और सबसे महत्वपूर्ण,
बाहर की दुनिया जीतने से पहले
स्वयं को जीतो।”

ऋषभायन अर्थात्
केवल ऋषभ की कथा नहीं।

ऋषभायन अर्थात्
मनुष्य की अपनी ही यात्रा,
असंस्कार से संस्कार की ओर,
अज्ञान से ज्ञान की ओर,
भोग से योग की ओर,
संग्रह से अपरिग्रह की ओर,
हिंसा से अहिंसा की ओर,
और अंत में,

मानव से महामानव की ओर।

ऋषभायन

अर्थात् अतीत को याद करने का
उत्सव नहीं;

यह तो
भविष्य को सही दिशा दिखाने का
प्रयत्न है।

क्योंकि
ऋषभ का प्रकाश
किसी एक युग का प्रकाश नहीं।
वह तो
जब तक मनुष्य
मानव बनने की खोज में रहेगा,
तब तक प्रकट होता रहेगा।

और इसलिए,
आओ, फिर एक बार
ऋषभ की ओर चलें।
राजा के रूप में नहीं,
मानवता के प्रथम गुरु के रूप में।

केवल तीर्थंकर के रूप में नहीं,
चेतना के प्रथम महाप्रवासी के रूप
में।

इतिहास के रूप में नहीं,
हमारे आने वाले कल की संभावना के
रूप में।

ऋषभ को केवल पढ़ें नहीं,
ऋषभ को
जिएँ।

ऋषभ को केवल याद न करें,
ऋषभ के मूल्यों को
अपने समय में उतारें।

क्योंकि,

ऋषभ जहाँ पूजे जाते हैं
वहाँ धर्म जन्म लेता है;

ऋषभ जहाँ समझे जाते हैं
वहाँ संस्कृति जन्म लेती है;

और ऋषभ जहाँ जिए जाते हैं
वहाँ मानवता जन्म लेती है।

आज के समय में इसका महत्व

वर्तमान के लिए पाँच विषय

आज विश्व जिन प्रश्नों को उठा रहा है, उनके लिए ऋषभायन प्राचीन विरासत को एक संसाधन के रूप में देखता है।

I

दंडनीति

इसका सिद्धांत “दुष्ट को दंड, सज्जन का सम्मान” है, किंतु इसका उद्देश्य दंड देना नहीं बल्कि सुधार करना है। इसमें व्यक्ति को अपराध से अलग रखा जाता है और करुणा को सबसे ऊपर रखा जाता है।

ऋषभायन कानून, न्याय और ध्रुवीकरण के समाधान पर आधुनिक चिंतन के साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिए न्याय के इस सुधार-केंद्रित विचार को प्रस्तुत करता है।

II

सततता

ऋषभायन सततता की जड़ों को ऋषभदेव द्वारा सिखाई गई जीवनशैली में खोजता है, जिसमें अहिंसा, संयम और अपरिग्रह शामिल हैं; यह कोई आधुनिक विचार नहीं है।

हज़ारों वर्षों तक उस जीवनशैली का टिके रहना ही इसका प्रमाण है, और यह ऋषभायन पूछता है कि प्रकृति के साथ संतुलन खोजते विश्व को यह क्या सिखा सकती है।

III

विश्व शांति व्यवस्था

भारत में अहिंसा तथा अनेक दृष्टिकोणों को साथ रखने की परंपराएं मौजूद हैं, और ऋषभायन इसे विश्व शांति के आदर्श के रूप में प्रस्तुत करता है।

बंटी हुई दुनिया को भारत क्या योगदान दे सकता है, इसी विषय पर यह संवाद आयोजित करता है।

IV

गृहस्थ नीति

सामाजिक व्यवस्था की नींव गृहस्थ की आचार-संहिता: दैनिक जीवन की नैतिकता (आजीविका, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्य) को माना जाता है।

कोई सभ्यता अपनी संस्थाओं जितनी ही अपने घरों में टिकी रहती है, यह स्मरण कराती है।

V

आदि शिल्पकला विज्ञान नया

स्थापत्य और मूर्तिकला का मूल विज्ञान। ऋषभदेव द्वारा सिखाई गई छह आजीविकाओं में परंपरा शिल्प, अर्थात् शिल्पकला और स्थापत्य, को शामिल किया गया है।

ऋषभायन 3 में: भारत के 14 प्रकार के प्रासादों, अर्थात् मंदिर के शास्त्रीय रूपों, की प्रस्तुति।

अब तक की यात्रा

एक सेमिनार से एक अभियान तक

2024 ♦ ऋषभायन 1

दिनेश हॉल, अहमदाबाद • 19 अक्टूबर 2024

खेल, युवा एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ विभाग, गुजरात सरकार के आधिकारिक समर्थन से एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार और सांस्कृतिक संगोष्ठी का आयोजन हुआ, जिसमें शोध ग्रंथ 'ऋषभायन' का विमोचन किया गया।

10,000 **90+**

लोग

ग्रंथ में शोध-पत्र

2025 ♦ ऋषभायन 2

कोरा केंद्र मैदान, मुंबई • 19-21 दिसंबर 2025

तीन दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सेमिनार और उत्सव के दौरान देश भर के राजनीतिक व्यक्तित्वों और विद्वानों के साथ लगभग 50 संतों ने मंच साझा किया, जिनमें हिंदू, सिख, बौद्ध और अन्य परंपराओं के संत शामिल थे, और इस अवसर पर शोध-पत्र भी प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थियों द्वारा 72 और 64 कलाओं पर 124 मॉडल प्रदर्शित किए गए; अनेक विद्यार्थी कला का अनुभव साथ ले गए, जबकि कुछ ने इसी से अपने स्टार्टअप शुरू किए। इस कार्यक्रम में 'रिसर्च कॉर्नर' डिजिटल पोर्टल के साथ 1,111 दुर्लभ पांडुलिपियों का लोकार्पण भी हुआ।

1 लाख+

तीन दिनों में आगंतुक

1,111

दुर्लभ पांडुलिपियों का लोकार्पण

124

72 और 64 कलाओं पर विद्यार्थियों के मॉडल

6

नालंदा विश्वविद्यालय सहित शैक्षणिक और संस्थागत साझेदार

2026 ♦ ऋषभायन पूर्वायन

कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता • 24 सितंबर 2026

कलकत्ता विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन विभाग के सहयोग से 'भगवान ऋषभदेव और पूर्वी भारत की श्रमण परंपराएँ' विषय पर एक दिन का सेमिनार।

2026 ♦ ऋषभायन 3

नवलखी मैदान, वडोदरा • 27-29 नवंबर 2026

सबके लिए खुला एक तीन दिवसीय सांस्कृतिक सम्मेलन है, जिसमें अनेक परंपराओं की सभा, 72 और 64 कलाएँ, एक अंतरराष्ट्रीय सेमिनार, प्रदर्शनियाँ और सांस्कृतिक संध्याएँ शामिल हैं, जहाँ लगभग 1.5 लाख आगंतुकों की अपेक्षा रखी गई है।



ऋषभायन 1 का सेमिनार हॉल, अहमदाबाद, 2024।



ऋषभायन 2 में एक ही मंच पर अनेक परंपराओं के प्रमुख, मुंबई, 2025।

शोध और प्रकाशन

विद्वत्ता का बढ़ता भंडार

90+

शोध-पत्र • 2024

पहले संस्करण में शोध ग्रंथ 'ऋषभायन' का विमोचन हुआ और इसमें ग्रंथों और परंपराओं में मौजूद ऋषभदेव पर शोध-पत्र संकलित हैं।

1,111

पांडुलिपियाँ • 2025

ऋषभायन 2 में दुर्लभ पांडुलिपियों का लोकार्पण, शोधकर्ताओं के लिए डिजिटल पोर्टल 'रिसर्च कॉर्नर' के साथ।

ISBN

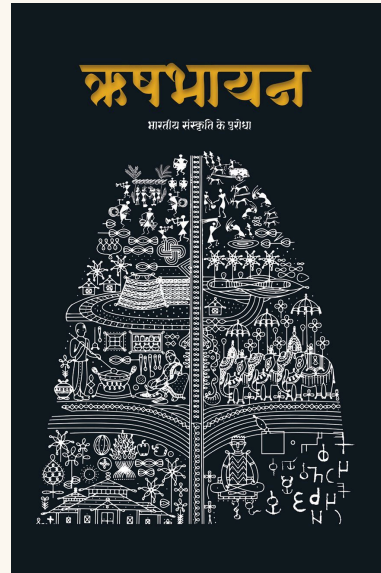
2026

ऋषभायन 3 शोध ग्रंथ। अंतरराष्ट्रीय सेमिनार में चयनित शोध-पत्र ISBN सहित प्रकाशित होंगे और LVJST के डिजिटल शोध अभिलेखागार के जरिए उपलब्ध कराए जाएंगे। ऋषभायन 2 के शोध ग्रंथ का लोकार्पण ऋषभायन 3 में होगा।

6

साझेदार • 2025

समझौता ज्ञापन (MoU) ऋषभायन 2 में नालंदा विश्वविद्यालय सहित शैक्षणिक और संस्थागत साझेदारों के साथ संपन्न हुए: सहयोगी शोध, पाठ्यक्रम विकास और विद्यार्थियों की भागीदारी के लिए।



ग्रंथ 'ऋषभायन', 2024।

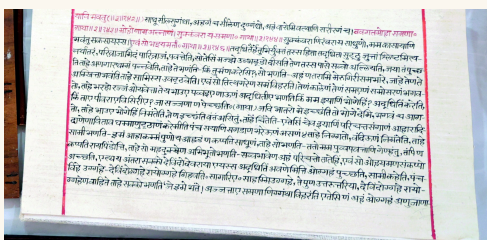
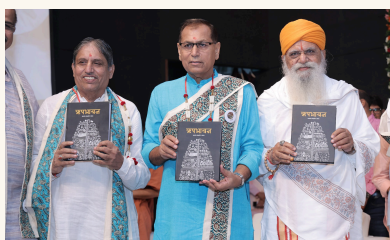
ट्रस्ट का निरंतर कार्य

पांडुलिपियाँ। ट्रस्ट देशभर के संग्रहों में सुरक्षित ग्रंथों और पांडुलिपियों की खोज, डिजिटलीकरण और संरक्षण को अंजाम देता है।

धरोहर स्थल। यह स्थलों की प्रलेखित सूची के आधार पर धरोहर मंदिरों और प्रतिमाओं का सर्वेक्षण, जीर्णोद्धार और संरक्षण करता है।



ऋषभायन 2 में हुआ एक साझेदारी समझौता, मुंबई, दिसंबर 2025।



बाएँ: ऋषभायन 1 में शोध ग्रंथ 'ऋषभायन' का विमोचन, अहमदाबाद, अक्टूबर 2024। **दाएँ:** ऋषभायन 2 की प्रदर्शनी में एक पांडुलिपि, मुंबई, दिसंबर 2025।

ऋषभायन 3 एक नज़र में

ऋषभायन 3 में क्या है?

तिथियाँ 27-29 नवंबर 2026 शुक्रवार से रविवार	स्थल नवलखी मैदान वडोदरा, गुजरात, भारत	समय सुबह 9:30 – रात 8 अनुभूति ज़ोन, प्रतिदिन	प्रवेश निःशुल्क www.rushabhayan.org पर पंजीकरण के साथ
---	---	---	--

ज्ञान, संस्कृति, अध्यात्म और उद्यम एक ही मैदान पर सबके लिए खुले हैं और यहां लगभग 1.5 लाख आगंतुकों के आने की उम्मीद है। मैदान में प्रवेश करते ही ये स्थान देखे जा सकते हैं:

01 सर्वधर्म ऐक्य परिषद

मुख्य डोम में धर्मगुरु, राजनीतिक चिंतक और विश्वभर के विद्वान मौजूद रहेंगे, जहाँ शास्त्रार्थ, नए ग्रंथों का विमोचन और विभिन्न नई योजनाओं का शुभारंभ भी किया जाएगा।

03 अकादमिक सम्मेलन

ऋषभायन स्वाध्यायपीठ के अंतर्गत भारतीय संस्कृति और भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के विषय पर शोध-पत्र, पैनल चर्चाएँ और ज्ञान-मंथन आयोजित किए जाएंगे।

05 युवा अनुभूति केंद्र

देशभर के गुरुकुलों, पाठशालाओं, वेदांत शालाओं, प्रदर्शन कलाओं के, और स्कूल-कॉलेजों के विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए कला-आधारित प्रतियोगिता-मॉडल।

07 ऋषभ पाककला

'वन डिस्ट्रिक्ट वन क्यूज़ीन' के विचार पर आधारित शुद्ध और पौष्टिक आहार के अंतर्गत हर ज़िले का एक विशेष व्यंजन प्रदर्शित किया जाएगा, जिसकी बिक्री और भोजन की सुविधा भी उपलब्ध होगी।

09 ग्रंथ एवं पांडुलिपियाँ

पुस्तकें, पांडुलिपियाँ और भंडार: 'ज्ञान भारतम्' के अंतर्गत देशभर के पुस्तकालयों के ज्ञान-भंडार के साथ-साथ ट्रस्ट की अपनी प्रदर्शनियाँ भी शामिल हैं।

11 अकादमिक साझेदार

भारत और विदेश के विश्वविद्यालय तथा संस्थान अपने पाठ्यक्रम, उपाधियों, प्राध्यापकों, संग्रहालयों और पुस्तकालयों की जानकारी के साथ उपस्थित रहेंगे।

13 सांस्कृतिक उत्सव

27 और 28 नवंबर को शाम 7 से 10 बजे तक मंच पर भारतीय संस्कृति का आयोजन होगा, यह कोई मनोरंजन नहीं है – 27 को नृत्य-नाटिका और 28 को ऋषभायन संगीतायन।

02 शास्त्रार्थ

28 नवंबर 2026 को मुख्य डोम में भारत भर के पंडित और विद्वान पारंपरिक रीति से 'अनेकांत: विश्व शांति का मूलाधार' विषय पर शास्त्रार्थ करेंगे।

04 अनुभूति केंद्र

कलात्मक मॉडल और जीवंत प्रस्तुतियों के साथ 72 और 64 कलाएँ, जिनका श्रेय परंपरा राजा ऋषभदेव को देती है।

06 आदि शिल्पकला विज्ञान नया

वास्तुकला और मूर्तिकला का मूल विज्ञान प्रदर्शित किया जाएगा, जिसमें भारत के 14 प्रकार के प्रासादों, या मंदिर के शास्त्रीय रूपों, की प्रस्तुति शामिल है।

08 अष्टापद पवेलियन

अष्टापद पर्वत, जिसे परंपरा ऋषभदेव से जोड़ती है, उसका संपूर्ण इतिहास मॉडल और फ़िल्म के माध्यम से प्रदर्शित किया जाएगा।

10 ऋषभायन कला झोंकी

अकादमिक स्टॉल पर पांडुलिपि कला, लिपि, नृत्य और नृत्य-नाटिका से जुड़ी शोध-आधारित प्रस्तुतियाँ देखने को मिलेंगी।

12 अनुभूति ट्रेड स्टॉल

पारंपरिक शिल्प, कलात्मक वस्तुएँ और युवाओं तथा स्टार्टअप के नए विचारों का संग्रह खरीदारी के अवसर के साथ उपलब्ध रहेगा।

14 प्रातः साधना – विश्व शांति ध्यान

प्रातः साधना, योग और ध्यान की विविध पद्धतियों का अभ्यास संगीत तथा ध्यान के विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में किया जाएगा, जो रविवार, 29 नवंबर को सुबह 5:30 से 8 बजे तक होगा।

अकादमिक कार्यक्रम

अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

वडोदरा के सरकार-मान्य महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, सुमनदीप विद्यापीठ और पारुल विश्वविद्यालय, साथ ही नालंदा विश्वविद्यालय, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, मलाड कांदिवली एजुकेशन सोसाइटी (MKES), SAL एजुकेशन और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (IGNCA) के साथ जुड़कर, उनके शोध विद्वानों के साथ मिलकर तीनों दिन एक विशेष सेमिनार आयोजित होगा। भारत भर के और विदेश के अनेक विद्वान इसमें भारतीय संस्कृति, भारतीय ज्ञान परंपरा, राजा ऋषभदेव के योगदान और उनकी दंडनीति जैसे विषयों पर शोध-पत्र प्रस्तुत करेंगे, पैनल चर्चाओं में भाग लेंगे और विचार-मंथन करेंगे। यह सम्मेलन भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताओं और समृद्धि को उजागर करने का प्रयास करेगा।

शोध-पत्र सत्र

अकादमिक सेमिनार कक्ष में तीनों दिन दोपहर 1 से शाम 5 बजे तक प्रस्तुतियाँ होंगी, जहाँ हर प्रस्तुति 15 मिनट की होगी और उसके बाद प्रश्नोत्तर होगा।

पैनल

प्राचीन भारतीय न्यायशास्त्र के तुलनात्मक और अंतरराष्ट्रीय आयाम।

शास्त्रार्थ. 28 नवंबर 2026 को मुख्य डोम में भारत भर के पंडित और विद्वान पारंपरिक रीति से 'अनेकांत: विश्व शांति का मूलाधार' विषय पर शास्त्रार्थ करेंगे: विभिन्न परंपराओं के पाँच-पाँच विद्वानों की दो टीमों, एक संचालक के साथ, विद्वानों की सभा के समक्ष।

शास्त्रार्थ विद्वानों के बीच वाद की भारत की शास्त्रीय पद्धति है: पहले विरोधी मत — पूर्वपक्ष — पूरी तरह प्रस्तुत किया जाता है, फिर तर्क और प्रमाण के साथ उसका उत्तर — उत्तरपक्ष — दिया जाता है, मध्यस्थ और सभा के समक्ष। इसमें जीत नहीं, सत्य की खोज होती है — अनेकांत की भावना के अनुरूप, जो कहती है कि सत्य को अनेक पक्षों से देखा जा सकता है।

शोध-पत्र आमंत्रण

पूर्ण शोध-पत्र की अंतिम तिथि
30 अक्टूबर 2026

पाँच विषय-समूहों में चौंतीस शोध विषय:

शासन, समाज एवं दंडनीति	विषय 1–14	वैज्ञानिक एवं कालचक्र	25–30
ऐतिहासिक, पौराणिक, कलात्मक एवं साहित्यिक	15–19	सभ्यतागत ज्ञान एवं उसका प्रसार	31–34
अंतरराष्ट्रीय एवं तुलनात्मक	20–24		

कौन प्रस्तुत कर सकता है
शिक्षाविद, शोध विद्वान, स्नातकोत्तर एवं डॉक्टरेट विद्यार्थी,
स्वतंत्र शोधकर्ता और विषय विशेषज्ञ

भाषाएँ
अंग्रेज़ी, हिंदी या गुजराती

शोध-पत्र
3,000–4,000 शब्द, मौलिक और अप्रकाशित

प्रकाशन
चयनित शोध-पत्र ISBN के साथ ऋषभायन 3 शोध ग्रंथ में

यहाँ भेजें
rushabhayan@lvjst.org
विषय (Subject): Rushabhayan-3 Paper
Submission – [Sub-theme] – [Author
Name]

व्यवस्था
प्रत्येक चयनित लेखक को वडोदरा में प्रस्तुति के लिए
आमंत्रण

उपयोगी जानकारी

वडोदरा की यात्रा

पश्चिमी भारत के गुजरात में स्थित वडोदरा (बड़ौदा) विद्या और कला का ऐतिहासिक नगर और बड़ौदा रियासत की पूर्व राजधानी है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल चांपानेर-पावागढ़ पुरातत्व उद्यान यहाँ से लगभग 50 किमी दूर है।

स्थल

नवलखी मैदान, वडोदरा, गुजरात, भारत।

कैसे पहुँचें

हवाई मार्ग से: वडोदरा हवाई अड्डे (BDQ) पर घरेलू उड़ानें उपलब्ध हैं; निकटतम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा अहमदाबाद (AMD) एक्सप्रेसवे से लगभग 110 किमी दूर है।

रेल मार्ग से: मुंबई-दिल्ली मुख्य रेल मार्ग पर वडोदरा जंक्शन स्थित है।

मौसम

नवंबर के अंतिम दिनों में मौसम शुष्क रहता है: दिन हल्के गर्म, शामें ठंडी।

विदेश से आने वाले आगंतुकों के लिए

भारतीय वीज़ा मिलने में कुछ सप्ताह लग सकते हैं, इसलिए कृपया जल्दी संपर्क करें।

आयोजक

गुजरात का एक पंजीकृत सार्वजनिक धर्मार्थ ट्रस्ट **श्री लब्धि विक्रम जनसेवा ट्रस्ट (LVJST)** भारत की विरासत के संरक्षण, शोध और पुनरुत्थान के लिए समर्पित है। इसका कार्य तीन क्षेत्रों में है: पांडुलिपियाँ, धरोहर स्थल, तथा **ऋषभायन** नाम से होने वाले शैक्षणिक और सांस्कृतिक आयोजन।

शोध-पत्र, विद्वान और संस्थान

rushabhayan@lvjst.org

सामान्य पूछताछ

info@rushabhayan.org

फ़ोन

+91 86554 49611

वेबसाइट और पंजीकरण

www.rushabhayan.org

सोशल मीडिया

@ f X @rushabhayan

▶ Rushabhayan

भागीदारी के तरीके

1 संस्थान के रूप में साझेदार बनें

विश्वविद्यालय, शोध संस्थान और सांस्कृतिक संस्थाएँ अकादमिक साझेदार के रूप में जुड़ सकती हैं: समझौता ज्ञापन (MoU), सम्मेलन में साझेदार स्टॉल, या अपने विद्यार्थियों और प्राध्यापकों की भागीदारी द्वारा।

2 पांडुलिपियाँ और संग्रह साझा करें

दुर्लभ पांडुलिपियाँ रखने वाले पुस्तकालय, संग्रह और विद्वान उनके दस्तावेज़ीकरण, डिजिटलीकरण और संरक्षण के लिए ट्रस्ट से जुड़ सकते हैं।

3 विद्यार्थियों को जोड़ें

विभाग और कॉलेज अपने विद्यार्थियों को सेमिनार, प्रदर्शनियों तथा 72 और 64 कलाओं के अनुभूति केंद्र से जोड़ सकते हैं।



ऋषभायन 3

भारतीय संस्कृति के पुरोधा

नवलखी मैदान · वडोदरा
27-29 नवंबर 2026

प्रवेश निःशुल्क

पंजीकरण आवश्यक · www.rushabhayan.org



आयोजक

श्री लब्धि विक्रम जनसेवा ट्रस्ट



पंजीकरण के लिए स्कैन करें